E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कालिदास की नाट्यकला

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

कालिदास की काव्यकला को उदात्त एवं श्रेष्ठ बनाने में उनकी नाट्यकला का अपूर्व योगदान है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में उनकी नाट्यकला के पदे पदे दर्शन होता है।उनकी वस्तु-संघटना, चरित्र चित्रण तथा रस योजना इतनी आकर्षक, हृदयग्राही, उपयुक्त तथा समीचीन है कि उनकी नाट्य रचनाओं को सहृदय के हृदय का भाजन बना देती हैं।

१. वस्तुयोजना- कालिदास ने महाभारत की नीरस कथावस्तु को परिवर्तित कर किस प्रकार उसे सरस और उपयोगी बनाया है यह बतलाया जायेगा। नाटक का प्रथम अङ्क मृगया-दृश्य से प्रारम्भ होता है । मृग का अनुसरण करते हुए राजा को मृग पर बाण चलाने के लिए ऋषिकुमार मना करते हैं। राजा मान जाता है और उनके अनुरोध पर आश्रम में राजा का प्रवेश स्वाभाविक हो जाता है। वह छिपकर आश्रम कन्याओं की परिहासमयी बातों को सुनता है और भ्रमर से पीड़ित शकुन्तला की रक्षा हेतु सहसा उपस्थित होता है। तदनन्तर दुष्यन्त और शकुन्तला का परस्पर अनुराग हो जाता है। इसी बीच शकुन्तला के जन्म-वृत्तान्त की जानकारी होने पर उसके अनुराग में श्रीवृद्धि हो जाती है। इस प्रकार राजा के प्रवेश, आश्रम कन्याओं के समक्ष उसकी उपस्थिति तथा शकुन्तला के प्रति उसके प्रेम में एक प्रकार की स्वाभाविकता आ जाती है और साथ ही कथावस्तु की गतिशीलता में भी सहायता मिलती है। द्वितीय अङ्क में राजा की मृगया से बिरति और विदूषक के साथ शकुन्तला के विषय में वार्तालाप, आश्रम में जाने के लिये व्याज को सोचते ही दो ऋषि कुमारों का राजा से आश्रम में चलने के लिये प्रार्थना आदि घटनाओं से नायक-नायिका की प्रणय कथा को गतिशील करने में सहायता मिलती है। विदूषक को राजधानी भेज देने से तृतीय अङ्क में दुष्यन्त शकुन्तला के मिलन का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। फलस्वरूप बड़े ही स्वाभाविक ढंग से दोनों विरही प्रणयी युगल का संयोग होता है और

दोनों गान्धर्व विवाह के बन्धन में बंध जाते हैं। गौतमी के प्रवेश द्वारा तृतीय अङ्क समाप्त होता है। गौतमी का प्रवेश भी गत्यावरोधक के रूप में कथावस्तु की गति को मन्द कर उसे सही राह पर ले जाता है। चतुर्थ अङ्क के विष्कम्भक में दुर्वासा के शाप की घटना तथा किसी अभिज्ञान के दिखाने पर शाप मुक्ति का आश्वासन दोनों से ही वस्तु-योजना में अपूर्व सहायता मिलती है क्योंकि शाप की स्थिति न होने की दशा में दुष्यन्त के पहचान लेने पर पञ्चम अङ्क में ही कथा समाप्त हो जाती। शाप के कारण आगे के दो अङ्कों की योजना स्वाभाविक हो जाती है। पञ्चम अङ्क में राजा के द्वारा शकुन्तला का प्रत्याख्यान कर देने के बाद मेनका (दिव्य ज्योति) द्वारा ले जाना भी उक्त क्रम में सहायक होता है। षष्ठ अङ्क में धीवर प्रसङ्ग के द्वारा मुद्रिका प्राप्ति की घटना भी नितान्त महत्त्वपूर्ण है। उसके कारण राजा शकुन्तला को स्मरण करता है और विरहव्यथित होकर उसके मिलन के लिये तड़पता है और अन्त में इन्द्र के आह्वान पर अपनी कामुक वृत्ति का परित्याग कर राजा दुष्यन्त कर्तव्यपरायण पति के रूप में अपनी पतिव्रता पत्नी तथा चक्रवर्ती लक्षणों से युक्त पुत्र से मिलता है।

वस्तुतः अभिज्ञानशाकुन्तलम् में वर्णित प्रत्येक घटना सार्थक है और किसी विशेष उद्देश्य से रखी गई है। कालिदास कथानक के संचयन और उसके निर्माण में असाधारण कुशल है। उनके रचना-कौशल में उर्वरता, नवीनता और कल्पना का बाहुल्य है। महाकवि कालिदास के वर्णन और घटनाएं संकेतात्मक होती हैं। नाटक के प्रारम्भिक वर्णनों द्वारा नाटक के कथानक की ओर संकेत किया गया है। 'या सृष्टिः.....' के माध्यम से नाटकीय घटनाओं का सांकेतिक विवेचन प्राप्त होता है। 'दिवसाः परिणामरमणीयाः' से यह सङ्केत प्राप्त होता है कि नाटक सुखान्त होगा। 'यात्येकतोऽस्तशिखरम्.....' से यह सङ्केत प्राप्त होता है कि सुख-दुःख का क्रम अनिवार्य है

२. चरित्र चित्रण- कालिदास की नाट्य-कला की दूसरी विशेषता है अनुकूल पात्रों की सृष्टि और उनका चरित्र चित्रण। वस्तुतः कालिदास चरित्र-चित्रण में बहुत कुशल हैं। उनके प्रत्येक पात्र में अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है। प्रत्येक पात्र की कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं, उनका विकास बहुत व्यवस्थित रूप में हुआ है। उन्होंने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से अपने पात्रों के चरित्र का चित्रण किया है। सभी पात्र अपने विशिष्ट गुणों से मण्डित हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं,

अतः उनके द्वारा उनका सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक चित्रण उत्तम रूप से हुआ है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि कालिदास को समाज के विभिन्न वर्गों की गतिविधि का कैसा सूक्ष्म ज्ञान था और उसका मनव-प्रवृत्ति-निरीक्षण कितना गम्भीर था। राजा दुष्यन्त धीरोदात्त नायक है। वह वीर एवं प्रतापी है। वह अपने कर्तव्यपालन का विशेष ध्यान रखता है। शाप के प्रभाव के कारण शकुन्तला का प्रत्याख्यान करता है और उसकी स्मृति आने पर उसे पुनः स्वीकार करता है। कालिदास ने तीन वृद्ध ऋषियों का वर्णन किया है और तीनों में अन्तर किया है। कण्व अत्यन्त सज्जन महर्षि हैं। उन्होंने शकुन्तला को पुत्री के तुल्य पाला है। उसके अनिष्टनिवारणार्थ वे सोमतीर्थ जाते हैं। मारीच वीतराग ऋषि हैं। निर्लेपभाव से संसार की गतिविधि को देखते हैं और संसार को कर्तव्योपदेश देते हैं। दुर्वासा अत्यन्त क्रोधी ऋषि हैं। दो ऋषि शिष्य हैं। शारङ्गरव अभिमानी, क्रोधी और अधिक बोलने वाला है। शारद्वत विनीत, शान्त और मितभाषी है। तीन सखियाँ हैं। शकुन्तला बहुत सुशील, विनीत, लज्जाशील, मितभाषी, मधुरभाषी, पतिव्रता और सरल हृदय वाली है। अनुसूया शान्त, गम्भीर, मितभाषी और विचारशील है। प्रियंवदा हास्यप्रिय, वाक्चतुर और अधिक बोलने वाली है। कालिदास ने पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

३. रसयोजना- रसवादी कालिदास ने अपनी रस योजना के द्वारा भी अपने नाटक को अत्यन्त सरस तथा हृदयग्राही बनाया है। सहृदय रसास्वाद करता हुआ उनके नाटक को देखता या पढ़ता है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् शृङ्गार रस प्रधान नाटक है। इसमें संयोग शृङ्गार अंगी है और विप्रलम्भ शृङ्गार, करुण, वीर, अद्भुत, हास्य, भयानक, वत्सल और शान्त ये अंग (गौण) रस हैं।

४. कथोपकथन (संवाद)- पात्रों के कथोपकथन घटनाओं एवं परिस्थितियों के सर्वथा उपयुक्त हैं। भाषा की सरलता, सुबोधता, स्वाभाविकता तथा लालित्य के कारण एक ओर काव्यानन्द प्राप्त होता है, दूसरी ओर संवाद के सहारे घटना आगे बढ़ती है।

५. संवाद- कालिदास के नाटकों के संवाद अनावश्यक विस्तार से रहित हैं। शाकुन्तल के संवाद अतीव रोचक तथा संक्षिप्त हैं। नाट्यकला की दृष्टि से वे उपयोगी तथा स्वाभाविक हैं। प्रथम अङ्क में दुष्यन्त तथा तापस कन्याओं, द्वितीय अङ्क में राजा तथा विदूषक, तृतीय अङ्क में शकुन्तला, अनसूया,

प्रियंवदा तथा राजा, चतुर्थ अङ्क में कण्व तथा अनसूयादि, पञ्चम अङ्क में राजा एवं शार्ङ्गरव तथा शकुन्तला के संवाद अतीव रोचक तथा पात्रों के स्वभाव एवं विषय के अनुकूल हैं। उनमें छोटे-छोटे किन्तु स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग हुआ है।

६. वर्णन कुशलता- उनकी नाट्यकला की एक यह भी विशेषता है कि उनकी वर्णन-शैली सर्वथा संक्षिप्त एवं सरस है। नपी तुली भाषा में नपे तुले ढंग से वे वर्ण्य विषय का वर्णन करते हैं जिससे काव्य-सौन्दर्य तो अवश्य रहता है पर नाट्य-स्वरूप खण्डित नहीं होता। शाकुन्तल में भयभीत मृग, दुष्यन्त, विरहाकुल शकुन्तला, मारीच, आश्रम आदि के वर्णन उदाहरण स्वरूप लिये जा सकते हैं।